11 -बाल गंगाधर तिलक

एक बार अध्यापक ने कक्षा में छात्रों को गणित के कुछ प्रश्न हल करने के लिए दिए। कक्षा के सभी छात्र तल्लीन होकर अपना कार्य कर रहे थे। एक छात्र चुपचाप बैठा था। शिक्षक ने उससे पूछा, "तुम गणित के प्रश्न क्यों हल नहीं कर रहे हो?" छात्र ने कहा, "मैंने प्रश्नों को हल कर लिया है।" आश्चर्यचकित शिक्षक ने पूछा, "कहाँ?" छात्र- 'मस्तिष्क में।' शिक्षक - 'अच्छा तो उत्तर बताओ।' बालक ने खड़े होकर शिक्षक द्वारा दिए गए सारे प्रश्नों को मौखिक रूप से ही हल कर दिया। अद्भुत प्रतिभा का धनी यह बालक गंगाधर तिलक था।

बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई सन् 1856 ई. को महाराष्ट्र राज्य में कोंकण जिले के रत्नागिरि नामक स्थान में हुआ था। इनके पिता का नाम गंगाधर राव और माता का नाम पार्वती बाई था। इनका बचपन का नाम 'केशव' था। छोटा होने के कारण घर में लोग इन्हें 'बाल' कहकर पुकारते थे। बाद में यही नाम प्रचलित हो गया। इनके पिता की शिक्षा में गहरी रुचि थी। उन्होंने अपने पुत्र की शिक्षा-दीक्षा पर पूरा ध्यान दिया।तिलक कुशाग्र बुद्धि के बालक थे। विद्यालय जाने से पूर्व ही इन्होंने अनेक संस्कृत ग्रंथ याद कर

लिए थे। इनकी प्रतिभा से शिक्षक बहुत प्रभावित थे। गणित, इतिहास और संस्कृत इनके प्रिय विषय थे। गणित के कठिन से कठिन प्रश्न वे मौखिक रूप से हल कर लेते थे।

किशोरावस्था के पूर्व ही इनके माता-पिता का देहांत हो गया। इनका विवाह सत्यभामा बाई से हुआ। विवाह में इन्होंने दहेज में कुछ नहीं लिया। सन् 1877 ई0 में बी0ए0 परीक्षा उत्तीर्ण कर इन्होंने कानून की डिग्री प्राप्त कर ली। इसके बाद वकालत करने लगे।

तिलक शिक्षा को स्वतंत्रता का आधार मानते थे। इन्होंने यह भी अनुभव किया कि देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाओं का प्रयोग भी आवश्यक है। अतः इन्होंने 'केसरी' तथा 'मराठा' नाम के समाचार पत्र भी निकाले। इन समाचार पत्रों के माध्यम से ये ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष करने का संदेश देते थे। पत्रों के माध्यम से इन्होंने स्वतंत्रता के प्रति लोगों में नयी चेतना जगाई। इनके लेख सबका ध्यान आकर्षित करते थे। इनके कार्यों और विचारों के कारण सब लोग इनका आदर करने लगे और इनके नाम के साथ 'लोकमान्य' शब्द प्रचलित हो गया।

तिलक ने विधवा-विवाह एवं महिला-शिक्षा पर विशेष जोर दिया। बाल-विवाह जैसी कुरीति का विरोध किया तथा मजदूरों की दशा सुधारने के लिए आंदोलन चलाया। इन्होंने स्वदेशी की भावना का भी प्रचार किया।

तिलक के स्वतंत्र एवं उग्र विचारों से रुष्ट होकर अंग्रेज सरकार इन्हें बार-बार जेल में डालती रही। सन् 1907 के सूरत कांग्रेस अधिवेशन में इन्होंने सिंह गर्जना की- 'स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम उसे लेकर रहेंगे।' ब्रिटिश सरकार ने इन पर सन् 1908 में राजद्रोह का मुकदमा चलाया और छह वर्ष की सजा देकर मांडले (म्याँमार) जेल में डाल दिया। यह समाचार पूरे भारत में आग की तरह फैल गया। इसके विरोध में मुंबई के बाजार तथा मिलें बंद हो गईं।

जेल में इन्होंने तीन पुस्तकों की रचना की। पहली पुस्तक थी 'गीता रहस्य' जो बहुत प्रसिद्ध हुई। इस पुस्तक से इनकी विद्वता और अध्ययनशीलता का परिचय मिलता है। अन्य दो पुस्तकें थीं - 'ओरियन' और 'आर्कटिक होम इन वेदाज'। छह वर्ष की सजा पूरी

कर वे 1914 में मांडले जेल से बाहर आए। बाहर आकर वे फिर स्वतंत्रता प्राप्ति के लक्ष्य में जी जान से जुट गए। अपनी लगन तथा निष्ठा के बल पर इन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की सुदृढ़ आधारशिला रखी।

स्वतंत्रता-संग्राम का यह चमकता नक्षत्र 1 अगस्त 1920 को सदा के लिए अस्त हो गया। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के विचार, देशभक्ति और स्वातंत्र्य-प्रेम हमारे लिए सदा ही प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे।

अभ्यास

शब्दार्थ-

तल्लीन = पूरी तरह लगा हुआ

निष्ठा = विश्वास, श्रद्धा

प्रतिभा = योग्यता

कुशाग्र बुद्धि = तीक्ष्ण बुद्धिवाला

रुष्ट = नाराज

जन्मसिद्ध = जन्म से प्राप्त

कुरीति = बुरी प्रथा

विद्वता = ज्ञान, अध्ययनशीलता

1. **बोध प्रश्न**: उत्तर लिखिए -

(क) बालक गंगाधर ने शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों को कैसे हल किया ?

(ख) तिलक के नाम के साथ 'लोकमान्य' शब्द कैसे जुड़ा ?

(ग) लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने क्या नारा दिया ?

(घ) पाठ में लोकमान्य तिलक की किन-किन विशेषताओं का वर्णन किया गया है ?

2. **भाषा के रंग** -

(क) स पाठ में आपको जिन-जिन शब्दों के मतलब (अर्थ) नहीं पता है, उन्हें छाँटकर अपनी कॉपी पर लिखिए।

- शब्दकोश या शिक्षक की मदद से इनके अर्थ पता कीजिए।
- अब इन शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

(ख) प्रत्येक वाक्य की खाली जगह में उसके दाईं ओर लिखे शब्द का सही रूप लिखिए- उदाहरण के लिए पहला वाक्य देखिए -

- तिलक नियमित रूप से व्यायाम करते थे। (नियम)
- तिलक शिक्षा को ..... का आधार मानते थे। (स्वतंत्र)
- उनके लेख सबका ध्यान ..... करते थे। (आकर्षण)

(ग) शब्दों को उदाहरण के अनुसार स्त्रीलिंग में बदलिए - जैसे: लेखक - लेखिका शिक्षक -

बालक - नायक -

(घ) शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़िए -

आश्चर्य, कुशाग्र, राष्ट्रीय, संघर्ष, संदेश, आकर्षित, स्रोत, रुष्ट, विद्वता।

(ङ) समान अर्थ वाले शब्द बताइए -

रुष्ट - सम्मान -

कठिन - निर्धन -

(च) 'स्वतंत्र' शब्द में 'ता' लगाने पर 'स्वतंत्रता' बनता है। इसी प्रकार नीचे दिए गए शब्दों में 'ता' जोड़कर नए शब्द बनाइए -

निर्धन - सज्जन - कठोर -

मानव - उदार - कोमल -

(छ) नीचे दिए गए सर्वनाम शब्दों के बहुवचन रूप पढ़िए, समझिए और पूरा कीजिए -

सर्वनाम शब्द	बहुवचन रूप	सर्वनाम शब्द	बहुवचन रूप
वह	वे	मैं	
यह	ये	मुझे	
उसने	उन्होंने	गुज़रो	
उसका	उनका	मेरे लिए	
उसके	उनके	मेरा	
इसने	इन्होंने	गुज़ारें	
इसका	इनका	किसका	
		किस पर	

3. **आपकी कलम से** -

(क) नीचे लिखे प्रत्येक शीर्षक पर दो-तीन वाक्य लिखिए -

- तिलक का बचपन
- तिलक की शिक्षा
- स्वतंत्रता के लिए तिलक का योगदान

(ख) पाठ में आए इन वाक्यों में कुछ सवालों के जवाब छिपे हैं। उदाहरण के अनुसार इन वाक्यों पर प्रश्न बनाइए -

जवाब सवाल-

- बाल गंगाधर तिलक का जन्म बाल गंगाधर तिलक का जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरी नामक स्थान में हुआ था। कहाँ हुआ था ?

में हुआ था।

- तिलक कुशाग्र बुद्धि के बालक थे। .....
- तिलक शिक्षा को स्वतंत्रता का आधार.....मानते थे।
- तिलक ने जेल में तीन पुस्तकों की .....रचना की।

4. **अब करने की बारी** -

लोकमान्य तिलक के जीवन से जुड़े रोचक प्रसंगों का संकलन कीजिए।

5. **मेरे दो प्रश्न**: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

6. **इस पाठ से -**

(क) मैंने सीखा - .....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा - ....

कितना सीखा-2

1. **उत्तर दीजिए** -

(क) 'हाँ में हाँ' लोककथा से क्या संदेश मिलता है ?

(ख) युवक माधो सिंह के मन में क्या सपना उभरता था ?

(ग) नानी ने अदिति को टोकरी में बाँधकर कौन सा फल दिया था ?

(घ) 'ग्राम श्री' कविता में किस ऋतु की झलक मिलती है ? उस ऋतु की पाँच विशेषताएं बताइए।

(ङ) राजकुमारी ने विदूषक से चंद्रमा के विषय में क्या बताया ?

(च) लोकमान्य तिलक की विशेषताओं को संक्षेप में लिखिए ?

2. नीचे कुछ कथन दिए गए हैं; उन्हें किसने कहा है ? लिखिए -

(क) चंद्रमा पैंतीस हजार मील दूर है। ....

(ख) चंद्रमा एक लाख पचास हजार .....

मील दूर है।

(ग) मैंने प्रश्नों को हल कर लिया है। .....

(घ) इसका स्वाद खट्टा है। .....

(ङ) मैं इस महान कार्य में आपके साथ हूँ। .....

3. अधूरी पंक्तियाँ पूरी कीजिए -

झर रहे ढाक, पीपल के दल,

.....

लहलह पालक, महमह

.....

4. नीचे दी गई पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) मलेथा की प्यासी धरती पर पानी बहने लगा।

(ख) पालकी पर लदकर चलना तो जीते जी ही मुर्दों की तरह जाने के बराबर है।

5. नीचे दिए गए शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

मेजबान, पर्यावरण, प्रतीक्षा, मंजिल, शानदार, सावधानियाँ

6. कोष्ठक में दिए गए सर्वनाम शब्दों में से उचित शब्द चुनकर वाक्य पूरा कीजिए-

(वह, उसका, तुम, तुम्हारे)

(क) ..... घर मेरे घर के पास है।

(ख) ..... प्रतिदिन व्यायाम करता है।

(ग) ..... पिता जी का क्या नाम है ?

(घ) मुझे विश्वास है कि ..... जरूर आओगे।

7. नीचे दिए गए शब्दों का विशेषण/क्रिया विशेषण के रूप में प्रयोग करते हुए

एक-एक वाक्य बनाइए -

वीर, धीरे-धीरे, सुंदर, फूट-फूटकर

8. ऐसे एक-एक वाक्यों की रचना कीजिए जिनमें- अल्प विराम, पूर्ण विराम तथा प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग हुआ हो।

9. अपने क्षेत्र में प्रचलित कोई लोककथा सुनाइए।

10. नीचे दिए गए शब्दों में लगे उपसर्ग और प्रत्यय को उनके सामने लिखिए -

शब्द उपसर्ग, शब्द प्रत्यय

प्रहार प्र धनवान वान

विहार ....शक्तिमान .....

आहार ..... बलवान .....

अनुपस्थित ..... मूल्यवान .....

निरुत्साहित .... श्रीमान .....

अपने आप-2

श्रवण कुमार

श्रवण कुमार अपने माता-पिता के इकलौते पुत्र थे। उनके वद्ध माता-पिता देख नहीं सकते थे। श्रवण उनकी भली प्रकार देख-भाल और सेवा करते थे।एक बार माता-पिता ने कहा, "बेटा, हम तीर्थ यात्रा करना चाहते हैं, परंतु क्या करें, देख नहीं सकते, अतः स्वयं यात्रा करने में समर्थ नहीं हैं।" श्रवण बोले "आप चिंता न करें। मैं आपको यात्रा पर ले चलूँगा।" श्रवण ने दो टोकरियों से काँवर तैयार की। उसमें एक ओर माता को और दूसरी ओर पिता को बिठाया। काँवर उठाकर वह यात्रा पर चल दिए।

श्रवण ने उन्हें अनेक तीर्थ स्थलों का भ्रमण कराया। एक बार वे एक वन से होकर जा रहे थे। मार्ग में वद्ध माता-पिता को प्यास लगी। श्रवण ने माता-पिता को छाँव में बिठाया और घड़ा लेकर पास ही बहती नदी से पानी लाने चले गए।

उसी समय अयोध्या के राजा दशरथ वन में आखेट कर रहे थे। घड़े में पानी भरने की आवाज सुनकर उन्हें लगा कि कोई जंगली जानवर नदी में पानी पी रहा है। राजा ने तुरंत शब्द-भेदी बाण चला दिया।

बाण लगते ही श्रवण चीत्कार कर भूमि पर गिर पड़े। राजा दौड़ कर वहाँ पहुँचे तो अपनी भूल पर उन्हें बहुत पश्चाताप हुआ, परंतु अब क्या हो सकता था ?

श्रवण ने कहा, "मेरे वद्ध माता-पिता मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। कृपा कर उन्हें पानी पिला दें।" यह कहकर श्रवण ने प्राण त्याग दिए। राजा बहुत दुःखी मन से उनके वद्ध माता-पिता

के पास गए। उन्हें अपना अपराध बताकर क्षमा माँगी, किंतु माता-पिता के दुःख की सीमा न रही। वद्ध पिता ने कहा, "जिस प्रकार पुत्र वियोग में हम प्राण त्याग रहे हैं उसी प्रकार तुम्हें भी अपने पुत्र वियोग का दुःख भोगना होगा।" श्रवण कुमार का नाम उनकी मातृ-पितृ भक्ति के लिए अमर है।

श्रवण कुमार की कथा पर प्रश्न बनाकर अपने मित्रों से पूछिए।